



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(65): 259-262

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

डॉ. आरती कौशल

हिंदी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय ढलियारा (हि. प्र.)

वैशाली की नगरवधु... एक विश्लेषण

डॉ. आरती कौशल

शोध सार

आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा रचित उपन्यास "वैशाली की नगरवधु" (1948-1949) पर आधारित यह शोध पत्र इस उपन्यास का एक गंभीर और विश्लेषणात्मक अध्ययन है। यह उपन्यास छठी - पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के भारतीय इतिहास, विशेष रूप से लिच्छिवी गणराज्य "वैशाली" के गौरवमयी और हासशील युग का जीवंत चित्रण है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का पुनर्निर्माण करते हुए नगरवधु "आम्रपाली" के चरित्र के माध्यम से नारी के आत्मसम्मान, विवशता, स्वाभिमान और उसके टूटने के पश्चात उसके वैराग्य की यात्रा को रेखांकित करना है। यह शोध पत्र तत्कालीन समय का एक अकाट्य प्रमाण है जो आज भी नारी विमर्श और सत्ता-संरचना के संदर्भ में प्रासंगिक है। आम्रपाली नगरवधु बनने को विवश होकर भी अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ने में सफल रहती है और अंततः महात्मा बुद्ध की शरण में जाती है, ये नारी की अदम्य शक्ति का प्रतीक है।

मुख्य शब्द : आम्रपाली, वैशाली गणराज्य, नगरवधु, बौद्धकाल, नारी संवेदना, ऐतिहासिकता, चतुरसेन शास्त्री।

साहित्यकार समाज का सबसे संवेदनशील प्राणी होता है, जो समाज को बदलने की अपेक्षा करता है। वह समाज देश और राष्ट्र की सीमाओं से परे तक अपने परिवार की कल्पना करता है अर्थात् उसका अपना कोई परिवार न होकर पूरा विश्व उसका परिवार होता है। इनकी साहित्य साधना का मुख्य स्वर मानवतावाद है। वैशाली की नगरवधु कुछ इसी प्रकार का उपन्यास है। आचार्य चतुरसेन बहुप्रतिभासंपन्न एवं समृद्ध साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने चालीस वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हुए विस्तृत साहित्य का निर्माण किया। उन्होंने अपने उपन्यासमें यही भावना उजागर की है। वे लिखते हैं, "मैं उपन्यास रचना करता हूँ अपने लिए। अपनी आत्म संतुष्टि के लिए। उसमें न प्रचारभावना है, न वैराभावना केवल मनुष्य के प्यार करने और उसे सुखी और भयहीन देखने की मेरी कामना रहती है। वही कामना मेरे साहित्य की प्रेरक शक्ति है।"¹

"वैशाली की नगरवधु" उपन्यास आचार्यजी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1948 में हुआ।² आचार्यजी ने इतिहास के नियमित अध्ययन से प्राप्त रस को इतिहास रस मानकर इतिहास के यथार्थ को साहित्य में सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इतिहास जीवन का सत्य है और जीवन का सत्य साहित्य के सत्य से भिन्न है। "जो साहित्यकार मन के भाव से छोट्टे से सत्य को विना विकृत किए इतना विशाल करके प्रकट करने का सामर्थ्य रखता है कि सारा संसार उसे देख सके और इतना पक्का रंग भरता है कि शताब्दियां बीत जाने पर भी वह फीका न पड़े, वही सच्चा और महान साहित्यकार है।" आचार्य चतुरसेन ने वैशाली की नगरवधु उपन्यास में नारी का सही चित्रण किया है।³

साहित्यकार के दायित्व पर चर्चा करती हुई महादेवी वर्मा जी लिखती हैं, "माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से संतान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋतु के बिना अंकुर को विकास नहीं दे सकती, साहित्यकार भी उसी प्रकार गंभीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे पाता।"⁴

Correspondence:

डॉ. आरती कौशल

हिंदी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय ढलियारा (हि. प्र.)

चतुरसेन जी ने इस उपन्यास में अपने को सभ्य एवं श्रेष्ठ कहलाने वाली जातियों के काले कारनामों से संपूर्ण मानव जन को अवगत करवाया है जिन्होंने समाज में कुरीतियों, विसंगतियों, रूढ़ियों को जन्म दिया जिनके कार्य नीच, भेद और अहंकार झूठा था।⁵

आचार्य चतुरसेन के उपन्यासों में नारी अपनी समग्रता में चित्रित हुई है। अपने महनीय गुणों के कारण वह नारी जाति का उद्धार करती है। वह आदर्श पत्नी, ममतामयी मां, परिश्रमी और स्नेहमयी वहन, बेटी रूप में संपन्न, त्यागी एवं बलिदानिनी नारी के रूप में हमारे सामने आती है जो अपने परिवार, देश के लिए मूल बलिदान देती है। नारी संपूर्ण सृष्टि का आधार है, परन्तु पुरुष के समान उसका मूल्यांकन नहीं रहा है। इस उपन्यास में दर्शाया गया है कि किस प्रकार नारी की भावनाओं, आकांक्षाओं को दबाये जाने पर या हीन समझकर उसे प्रताड़ित किया जाता है या उसकी इच्छाओं के विरुद्ध उसे कार्य करने को विवश किया जाता है।

नारी का अप्रतिम सौंदर्य ही उसके लिए अभिशाप

आम्रपाली वचन में कुचुक पहनने, जो दूसरों ने भी पहना था की इच्छा जाहिर करती है परन्तु उसके पिता के पास इतना धन नहीं होता। उसकी आंखें आंसुओं से भर जाती हैं वह चिन्तित अवस्था में सोचने लगता है कि एक बार फिर वैशाली में जाकर पुरानी नौकरी की याचना की जाए वह वृद्ध हो चुका था परन्तु उसके लिए कन्या का विचार सर्वोपरि था, फिर भी उसमें बल था। उसकी चिन्ता का कारण केवल यही नहीं था उसे चिन्ता थी बालिका के अप्रतिम सौंदर्य की सहस्राधिक बालिकाएं भी उस पारिजात कुसुम तुल्य कुंदकलिका के समान नहीं थी। किसी फूल में इतनी खुशबू, कोमलता एवं सौंदर्य नहीं था उसे चिन्ता थी कि वैशाली गणतंत्र के उस विचित्र कानून के अनुसार उसकी कन्या विवाह से वंचित करके कहीं "नगरवधु" न बना दी जाए।

कुलवधु के अधिकारों से वंचित नारी

चतुरसेन के उपन्यास "वैशाली की नगरवधु" में आम्रपाली ऐसी दुखित नारी है जिसे बलात्कारवधु बना दिया जाता है। वह उस कानून को धिक्कृत कहती है जो कानून उसे नगरवधु बनने पर विवश करता है। नारी आत्मगौरव को धिक्कृत कानून के पंक्त में डुबोने में अभिशाप आम्रपाली को उसके अप्रतिम सौंदर्य के कारण वैशाली गणराज्य द्वारा संपूर्ण नगर की "नगरवधु" बना दिया जाता है। उसकी अत्यधिक सुंदरता ही अपराध बन जाती है। इसी अपराध के कारण वह जीवन के गौरव को लांछना और अपमान के पंक्त में डुबोने को अभिशाप हो जाती है।

पुरुष वर्चस्व के समक्ष नारी परतंत्र

"वैशाली की नगरवधु" उपन्यास के समकालीन समाज में पुरुषों का वर्चस्व स्त्री से ज्यादा था। नारी को पुरुष की दासी माना जाता था। चतुरसेन जी ने इसी तरह नारी संवेदना को प्रकट किया है। पुरुष

चाहे जितने विवाह करे परन्तु नारी किसी एक की पत्नी ही हो सकती थी, केवल एक अप्रतिम सुंदरी को छोड़कर। अत्यधिक सुंदर स्त्री को पुरुष समाज द्वारा ही नगरवधु बनाया जाता है।

वैशाली जनपद के लिए स्त्रीत्व की बलि

जब किसी स्त्री के साथ ऐसा होता है तो मन विचलित एवं दुखी होता है यह भी नारी के प्रति संवेदना है। आम्रपाली को वैशाली की "नगरवधु" बनाकर उससे स्त्रीत्व के सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं। उनकी बलि वह वैशाली जनपद के लिए दे देती है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए वृद्ध गणपति कहता है, "देवी अम्बपाली, तुम रोष अंसतोष को त्याग दो।

भोग्या बनने पर विवश नारी

आचार्य चतुरसेन के उपन्यास में नारी संवेदना का एक और रूप है, नारी का भोग्या रूप, जिसे उसे विवशता वश बनाया जाता है। इसका उदाहरण है क्रीता दासी। क्रीता दासी अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ दासों के हट्ट में विक्रय के लिए पहुँचती है। व्यापारी द्वारा पैरों में लोहे की शृंखला डालने पर वह विरोध करती है। व्यापारी जब चाबुक दिखाता है तो वह विरोध करती है। व्यापारी जब चाबुक दिखाता है तो वह भोलेपन में निडर होकर तेरे मालिक ने कहा था कि वैशाली में तेरा आदमी है, वहीं से भलामानस तुझे ले जाएगा!" इस से नारी की दयनीय दशा का पता चलता है कि राजा लोग अपनी काम लिप्सा को शांत करने के लिए स्त्रियों का भोग कर उन्हें पंडितों को दान कर देते थे और यह पंडित इनके साथ पशुवत् व्यवहार कर बाजार में इनका विक्रय कर इन्हे नारकीय जीवन यापन करने पर विवश करते थे।

नारी का प्रेरणात्मक रूप

"वैशाली की नगर वधु" उपन्यास में नारी प्रेरणा रूप में भी प्रस्तुत हुई है।⁶ इसका उदाहरण पद्मावती है। पद्मावती वाणिज्य ग्राम के सुदर्शन सेट्टी की पुत्री और राजगृह के आदि सुकुमार सेट्टीपुत्र शालिभद्र की पत्नी है। एक बार जब उसे लगता है कि उसके पति शालिभद्र कुछ बेचान और उदास से रहने लगे हैं तो महावीर के राजगृह में पधारने पर वह कहती है, "आर्यपुत्र सुना है कि राजगृह में एक सर्वजित्थमण आए हैं, जो सब भाति शुद्धदृबुद्धदृमुक्त है। यह सर्वजित् महावीर है अल्पभाषी है। सेविक मगधराज ने इनकी सेवी की है।"⁷ वह पति की मनोभावनाओं को जानकर अपनी सास से उनके विषय में बताती है कि हमें महावीर की शरण में जाना चाहिए। माता वैसा ही करती है और शालिभद्र जाता है तो वह परिषद्के समक्ष तीन शर्तें रखती है इससे भिक्षुक बनने को तैयार हो जाता है। गणपति आद्रकंठ से कहता है, "तुम चिरंजीविनी हो ओ, देवी आम्रपाली। तुम अमर हो ओ! जनपद की रक्षा का भार स्त्री पुरुष दोनों पर है। परन्तु सदैव इस पर अपनी बलि देते आएंगे है। स्त्रियों को भी बलि देनी पड़ती

नारी आत्मगौरव को धिक्कृत कानून के पंक्त में डुबोने में अभिशप्त

जब आम्रपाली को उसके अप्रतिमसौंदर्य के कारण वैशाली गणराज्य द्वारा संपूर्ण नगरकी "नगरवधु" बना दिया जाता है। उसकी अत्यधिक सुंदरता ही अपराध बन जाती है। इसी अपराध के कारण वह जीवन के गौरव को लांछना और अपमान के पंक्त में डुबोने को अभिशप्त हो जाती है।

नारी पुरुष एक दूसरे के पूरक

स्त्री और पुरुष स्वतंत्र व्यक्तित्व होते हुए भी परस्पर अभिन्न हैं। पुरुष में कर्मक्षेत्र, बुद्धिचातुर्य, शारीरिक बल एवं बहुआयामिता की क्षमता है वहीं नारी में मानसिक सौंदर्य, प्राणशक्ति, कर्मक्षेत्र में स्क्रियता, संस्कारशीलता, प्रेम निष्ठा और आत्मविस्तार की असीम शक्ति है। इस धरातल पर पुरुष और नारी दोनों को समान अस्तित्व व्यक्त करते हुए "चतुरसेन" कहते

हैं:-

"पुरुष हिरण्य गर्भ है" "नारी विराट प्रकृति है" "पुरुष स्वर्ग है"

"नारी पृथ्वी है" "पुरुष तपशक्ति का रूप है"⁸

ये गुण और मूल्य ही स्त्री पुरुष के मूल धर्म हैं जिनके मिलने से दोनों सुखी जीवन यापन कर सकते हैं। स्त्रियां हमारा घर हैं, परिवार है, हमारे घर की मर्यादा है। हमे उन्हें अपने से कमजोर, हीन एवं नीच नहीं समझना चाहिए। क्योंकि वे हमें अस्तित्व प्रदान करती हैं।

कर्तव्य परायण एवं पतिव्रता नारी

नारी संवेदना का यह रूप भी चतुरसेन ने प्रस्तुत किया। नारी कर्तव्य परायण और पतिव्रता होकर भी नारी संवेदना का स्रोत बनती है इसका उदाहरण मल्लिका है। मल्लिका कौशल नरेश प्रसेनजित की राजमाहिषी हैं वह पुरुष की कामुकता का शिकार होती है। वह हीन जाति की होते हुए भी अपने रूप और गुण के कारण प्रसेनजित द्वारा अंतः पुर में लाई जाती है।

नारी विषकन्या बनने पर विवश

नारी को उसकी इच्छा के विरुद्ध विषकन्या बनने पर विवश किया जाता है। यह विवशता भी नारी के प्रति संवेदना व्यक्त करती है। कुडनी एक ऐसी नारी है जिसे अपने ही पिता द्वारा अपने स्वार्थ के लिए जबरदस्ती विषकन्या बनाया जाता है। इसका पता इस बात से चलता है, जब वह कहती है, "नहीं पिता, अब नहीं, मैं सहन न कर सकूंगी।"⁹ उसके पिता आचार्य ने कठोर मुद्रा से उसकी ओर जाज्वल्य नेत्रों से देखा, और कहा, "सावधान।¹⁰ उन्होंने हाथों चमड़े का चाबुक पकड़ा और उसे दंड लेने के लिए डराया और विवश किया। इन से स्पष्ट होता है कि कुडनी की विषकन्या बनने के लिए मजबूर किया गया। मातृत्व सुख से वंचित नारी एवं वात्सल्यमयी इस उपन्यास में नारी वात्सल्यमयी मां के रूप में भी प्रस्तुत हुई है। उसका जीता जागता उदाहरण है आर्य मांतगी। वह ब्राह्मण गोविन्द स्वामी की पुत्री और वर्षकार की प्रेमिका है। इसका लालन-पालन मगध

राजगृह में बिंबसार के साथ ही होता है। यौवन की दहलीज पर पांव रखने पर इसका नारीत्व निखर उठता है। इसका युवक वर्षकार से आंतरिक अनुराग होता है लेकिन पिता की आज्ञा न मिलने से वह प्रणय सूत्र आबद्ध नहीं हो पाती।

कुल मर्यादा की रक्षा के लिए प्रेम बलिदान

नारी संवेदना का एक रूप यह प्रदर्शित होता है कि जिसे वह प्रेम करती है उसे अपना जीवनसंगी नहीं बना पाती उसके आगे कुल की मर्यादा है। चंद्रभद्रा ऐसी ही एक नारी है। वह कामुक एवं विलासी चंपा नरेश की सुपुत्री है। उसका स्वभाव पिता से विल्कुल विनीत है, मर्यादा, मानवीय गुणों से संपन्न है। वह व्यवहारकुशल व सच्ची प्रेमिका का दायित्व अपने कंधों पर लेता है। तभी वह सोम के प्रति आकर्षित होती है। वह उसे मन में ही जन्म-मरण का साथी मान लेती है। सोम और कुडनी द्वारा मुक्त हो जाने पर वह साकेत के साथ सुखपूर्वक रहने लगती है तो उसे सोम का वियोग असह्य लगता है। सोम जब राजकुमारी से मिलने पहुंचता है तो वह कहती है, " कि आज्ञा लिए विना यहां मत आना भद्र। यही उत्तम है, धर्म सम्मत है। गुरुजन-अनुमोदित है। कलिंगसेना अपने बलिदान की सार्थकता बताते हुए कहती है, " एक गान्धार पुत्री के आत्मदान से यदि युद्ध से मुक्ति मिले तो यह अधिक युक्तियुक्त है। इसी से पिता से मैंने सहमति प्रकट की और इस प्रकार मैंने एक बहुत बड़े संघर्ष से गान्धारों को बचा लिया।"¹¹ छोटी सी उम्र में ही उसने उस समय बलिदान का ऐसा अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। उस युग में राजमहलों में पलने वाली कन्या भी सुरक्षित नहीं थी तो आम नारी का क्या हाल होगा? समग्रतः कहा जा सकता है कि आचार्य चतुरसेन ने प्राचीन रूढ़ियों, कुप्रथाओं, अत्याचारों के कारण समाज की स्थिति को देखकर अपने साहित्यिक कर्तव्य को समझते हुए "वैशाली की नगरवधु" के रूप में जो औपन्यासिक कृति भारतीय समाज के समक्ष रखी वह अद्वितीय है। इस उपन्यास द्वारा नारी-स्वभाव में संवेदना का स्वर भरकर संपूर्ण समाज को उससे अवगत करवाने का जो कार्य चतुरसेन शास्त्री ने किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। चतुरसेन के उपन्यास वैशाली की नगरवधु के लगभग समस्त नारी-पात्र संवेदना से संपन्न हैं जिनकी संवेदना उनके त्याग, बलिदान, स्त्रीत्व अपहरण, वैश्या जीवन, मातृत्व सुख से वंचित जीवन आदि रूपों में स्पष्ट होती है। नारी वह शक्ति है जब वह सब कुछ सहन कर और सबके दुःख दर्द को अपना बना लेती है परन्तु जब उसके आत्मसम्मान को ठेस लगती है तो वह काली का रूप धारण करके दुष्टों का नाश कर देती है। समाज में उपस्थित भारतीय नारी को संवेदना का इतिहास हमारे इतिहास ग्रंथों में प्रस्तुत है। उपन्यास की नायिका आम्रपाली संवेदना का मुख्य रूप है। नारी मानवीयता का आधार है उसे अधिकार की अपेक्षा सहयोग की आवश्यकता अधिक है। आचार्य चतुरसेन ने नारी के प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति को उजागर कर इनमें उत्पन्न संवेदना को सभी समस्याओं का मूल माना है।

सन्दर्भ सूची

1. आचार्य चतुरसेन, गोली पृ. 7
2. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ. 25
3. आचार्य चतुरसेन, वयंरक्षामः, पृ. 9
4. महादेवी वर्मा, अक्षरा, 50 अक्तूबर, दिसंबर 2000, पृ. 112
5. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ. 5
6. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु पृ. 211
7. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु पृ. 143
8. आचार्य चतुरसेन, अदल-वदल पृ. 81
9. आचार्य चतुरसेन वैशाली की नगरवधु पृ. 250
10. आचार्य चतुरसेन वैशाली की नगरवधु पृ. 50
11. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ.173